फरवरी: 2023

वर्ष : 6 अंक : 5

सिफरी मासिक समाचार

बसंत पंचमी 2023

नील क्रांति की ओर अग्रसर

निदेशक की कलम से

"सफलता का कोई रहस्य नहीं हैं। यह तैयारी, कड़ी मेहनत और असफलता से सीखने का ही परिणाम होता है।" कोलिन एल. पावेल

संस्थान का मासिक न्यूज़लेटर का फरवरी 2023 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है।

फरवरी साल का दूसरा एवं सबसे छोटा महीना होता है- सामान्यतः 28 दिनों या फिर लीप वर्ष होने पर 29 दिनों का। फरवरी को भारत में 'बजट मंथ' भी कहा जाता है क्योंकि इस महीने में आम तौर पर भारत सरकार बजट पेश करती है। हमारे देश में इस महीने से 'बसंत' का आगमन होता है जिन्हें ऋतुराज कहते हैं। किसानों के लिए भी यह महीना काफी मायने रखता है क्योंकि इस महीने से ठंड कम हो जाती है।

इस माह पूरे देश में विभिन्न त्योहार मनाए जाते हैं जैसे, सूरजकुंड इंटरनेशनल क्राफ्ट मेला, मौनी अमावस्या, बसंत पंचमी, महर्षि दयानन्द सरस्वती जयन्ती लोसर फेस्टिवल, पारीयनपेट्टा कट्टाकुलम, नागौर मेला, ब्रज महोत्सव आदि।

प्रस्तुत अंक में जनवरी 2023 माह के संस्थान कार्यकलापों पर भी प्रकाश डाला गया है।

शुभकामनाओं सहित,

(बसन्त कुमार दास)

डा. एम वी गुप्ता – पद्मश्री पुरस्कार 2023 से सम्मानित

"मैं भारत के एक तटीय गांव से हूँ और मछुआरों को मछली पकड़ने के लिए समुद्र में जाते हुए देखता हूं। वे सुबह जाते हैं और शाम को वापस आते हैं। कभी-कभी उन्हें कोई मछली नहीं मिलती और जब मछली नहीं मिलती, तो उन्हें भूखा रहना पड़ता है क्योंकि वे बहुत गरीब हैं। पर यह एक ऐसा क्षेत्र है जहां थोड़े से प्रशिक्षण के साथ वे मछली पालन का अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। वे छोटे स्तर के उद्यमी बन सकते हैं और दूसरों के लिए रोजगार सृजित कर सकते हैं। इसलिए आप युवाओं को मछली पालन में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करें।

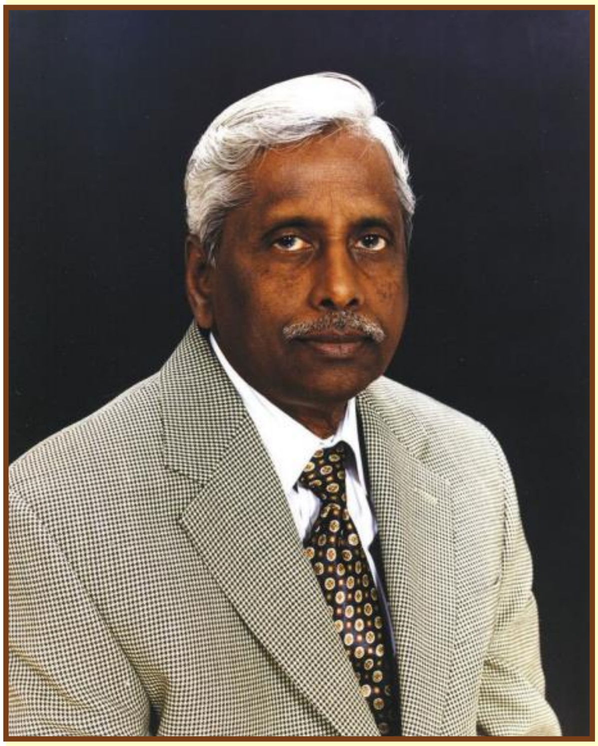

उपरोक्त कथन वर्ल्ड फूड प्राइज से सम्मानित डा. एम वी गुप्ता के हैं जिन्हे इस वर्ष का पद्मश्री पुरस्कार प्रदान किया है।

डा. एम वी गुप्ता (पूरा नाम : मोदाडुगु विजय गुप्ता) एक भारतीय जीवविज्ञानी और मत्स्य वैज्ञानिक हैं। इनका जन्म आंध्र प्रदेश के एक गाँव में हुआ था और उन्होंने 1962 में अपने कार्य की शुरुआत इस शोध से की थी कि मछली उत्पादन का लाभ गरीब किसानों तक कैसे पहुंचाया जाए।। उन्हें 2005 में गरीब मछुआरों द्वारा ताजे पानी की मछली पालन (तिलापिया पालन) के लिए कम लागत वाली तकनीकों के विकास और प्रसार के लिए विश्व खाद्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें दक्षिण पूर्व एशिया की नीली क्रांति का अग्रदूत माना जाता है।

दक्षिण और दक्षिण-पूर्व एशिया की जलवायु और पर्यावरण के लिए उपयुक्त जलीय कृषि विधियों और प्रौद्योगिकियों के क्षेत्र अनुसंधान और विकास के माध्यम से, डॉ. मोदादुगु विजय गुप्ता ने जलीय कृषि उत्पादन में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त की, जिसे अब हम नीली क्रांति के रूप में जानते हैं। 1960 के दशक की शुरुआत में डॉ. गुप्ता के अनुसार मछली पालन, जो अपेक्षाकृत कम लागत पर जन्तु प्रोटीन प्रदान कर सकता है, भावी खाद्य संकट को हल करने में मददगार सिद्ध होगा। उन्होंने ऐसी अनुकूल मछली प्रजातियों का विकास किया जिनका मौसमी बाढ़कृत झीलों के साथ गर्म और आर्द्र जलवायु क्षेत्र में भी पालन किया जा सके। विशेष रूप से 1980 के दशक के उत्तरार्ध से, उन्होंने तिलापिया और सिल्वर बार्ब जैसी मछलियों की प्रजातियों की पहचान की, जिनका बांग्लादेश के उथले पानी में भी पालन संभव हो। परिणामस्वरूप, 1986 में बांग्लादेश का वार्षिक मछली उत्पादन, जो उस समय समय लगभग 170,000 टन था, वर्ष 2004 में डॉ. गुप्ता के प्रयासों से लगभग 850,000 टन तक बढ़ गया। वर्ष 2000 के बाद से डॉ. गुप्ता ने अपने शोध को एशियाई देशों के अलावा अन्य देशों तथा अफ्रीका जैसे अविकसित देश, जहां बड़े तौर पर भूखमरी फैली हुई थी, वहाँ जलीय कृषि के अभिनव विधियों को विकसित किया जिससे गरीब किसानों को आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

डॉ गुप्ता को दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशियाई देशों में गरीबों के संत के तौर पर जाना जाता है क्योंकि उन्होंने मछुआरों को कृषि के अभिनव पद्धति पर प्रशिक्षण से उन्हे स्व-निर्भर बनाया। डॉ गुप्ता और उनके सहयोगियों ने दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया (बांग्लादेश, भारत, वियतनाम, थाईलैंड, कंबोडिया, लाओ पीडीआर और इंडोनेशिया में गरीबों की भूख और पोषण की कमी को दूर करने के लिए जलीय कृषि के कम लागत और उच्च दक्षता वाले तरीके विकसित किए। 1970 के दशक में, भारत का अनुसंधान झींगा मछली खेती जैसी उच्च लागत वाली जलीय कृषि विधियों के विकास पर केंद्रित था। पर इस अवधि के दौरान डॉ. गुप्ता ने अत्यधिक गरीब और साधनहीन किसानों के लिए जलीय कृषि विधियों पर शोध करने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने गरीब और भूमिहीन लोगों को अपशिष्ट पदार्थों जैसे चावल की भूसी, खरपतवार और खाद को पुनर्चक्रित करना सिखाया तथा बहु-मछली पालन तरीकों का विकास किया जैसे, तालाब में उच्च पोषण वाली मछली प्रजातियों का विविधिकरण और मिश्रित खेती। यह एक एकीकृत जलीय कृषि है, जो अनुकूल पर्यावरण और कृषि को जोड़ती है। इसके अलावा, डॉ. गुप्ता ने 5-10 भूमिहीन गरीब किसानों के छोटे समूहों को प्रेरित कर उन्हें जलीय कृषि में कौशल विकास किया तथा बाद में मछली पालन के लिए स्टार्ट-अप लागत के लिए बिना शर्त वित्तीय सहायता के साथ पट्टे के तालाबों में मछली पालन के माध्यम से किसानों की आर्थिक स्वतंत्रता प्रदान करने में मदद की।

दिनांक 18-19 फरवरी 1997 को फिलीपींस के मनीला में तत्कालीन ICLARM (अब वर्ल्डफिश सेंटर) मुख्यालय में आयोजित दो दिवसीय कार्यशाला, जिसमे डॉ. डी सिल्वा, डॉ. एम.वी. गुप्ता, डॉ. एकनाथ, डॉ. मदन डे और भागीदार देशों के साथ बांग्लादेश, चीन, फिलीपींस, थाईलैंड और वियतनाम के प्रतिनिधि उपस्थित थे।

महिलाओं की सामाजिक स्थिति और अधिकारों में सुधार

डॉ. गुप्ता ने एशियाई महिलाओं की सामाजिक स्थिति और अधिकारों में उल्लेखनीय सुधार के लिए भी पहल किया है। उन्होंने निर्धन दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशियाई गरीब महिलाओं के लिए जलीय कृषि विधियों का प्रसार किया, जिसके परिणामस्वरूप न केवल घरेलू आय और बेहतर पोषण में वृद्धि हुई बल्कि महिलाओं की सामाजिक स्थिति और अधिकारों में भी भारी सुधार हुआ। उनके अनुसार, इन देशों में महिलाओं की कोई आय नहीं है क्योंकि वे आर्थिक गतिविधियों में भाग नहीं लेती हैं और पुरुषों की तुलना में उनकी सामाजिक स्थिति भी कमतर है। डॉ. गुप्ता ने महिलाओं के लिए आर्थिक गतिविधियों में भाग लेने के अवसर पैदा किए, उन्हे आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित किया और जलीय कृषि के लिए आवश्यक बुनियादी कौशल पर शिक्षित किया। इसके अलावा, डॉ गुप्ता ने स्थानीय संगठनों के साथ विचार विमर्श किया ताकि महिलाओं को उनकी आर्थिक गतिविधियों के लिए आवश्यक धन और भूमि प्राप्त हो सके। ये पहल इतनी बड़ी सफलता है कि अब महिलाएं मछली पालन का एक बड़ा हिस्सा बन गई हैं जिससे उनकी घरेलू और सामाजिक दोनों स्तरों पर महिलाओं की स्थिति और अधिकारों में सुधार हुआ है।

कहते है, कि लीक छोड़ तीनों चलें – शायर, सिंह, सपूत। यह कहावत डा. गुप्ता पर एकदम सटीक बैठती है। समाज में अक्सर परंपराओं के सम्मान की बात कही जाती है, समाज द्वारा बनाए गए कायदे-कानूनों के व्यवहार को श्रेष्ठ सामाजिक होने का आदर्श माना जाता है, किंतु जिस तरह समाज चलता आया है यदि वैसा ही सबकुछ होता रहे तो फिर समाज में और भेड़ों के झुंड में कोई अंतर नहीं रहेगा। भेड़ों की एक प्रवृत्ति होती है कि जिधर से आगे की भेड़ निकल गई बस बाकी भेड़े सब उसी रास्ते से जाएगी। किंतु समाज में जो उत्कृष्ट प्रतिभाएं होती है, वह अनिवार्यत: पहले से ही चली आ रही लीक को तोड़ती है और अपनी नई लीक बनाती है। कोई भी शायर, कभी अपने पहले से लिखी गई कविता का अनुकरण नहीं करना चाहता और जंगल में शेर जिधर से गुजरता है वही उसका रास्ता होता है। इसी तरह एक होनहार पुत्र अपने पुरखों के मार्ग को प्रशस्त करता है, उनमें सुधार करता है और उनको आगे बढ़ाता है। यद्यपि लीक से हटने पर शुरू में समाज चौंकता है, आलोचना करता है, किंतु अंततः वह लीक से हटने के औचित्य को समझता है। डा गुप्ता ने चौथे वार्षिक कृषि, पोषण और स्वास्थ्य (एएनएच) अकादमी सप्ताह, (24 से 28 जून 2019) हैदराबाद, भारत में अपने एक इंटरव्यू (ANH2019 Fireside Chat on Aquaculture: Modadugu Gupta in conversation with David Little – YouTube) में कहा था कि जब पहली बार उन्होंने जलीय कृषि की बात अपने परिवार में की तो सबने उन्हे आगाह किया कि इस क्षेत्र में उनका कोई भविष्य नहीं है। सच भी यही था क्योंकि उस समय जल कृषि को किसी विज्ञान के तौर पर नहीं जाना जाता था। पर 1970 के दशक में जलीय कृषि में महत्वपूर्ण बदलाव होना आरंभ हुआ। वो कहते हैं कि, "मेरा फोकस मछुआरों के आवश्यकतानुसार ऐसी प्रौद्योगिकियों का विकास करना

था जो उनके सामाजिक, आर्थिक एवं पारंपरिक जरूरतों को पूरा कर सके। साथ ही, जल संसाधनों के उत्पादन क्षमता के अनुरूप उत्पादन करना था।"

डॉ गुप्ता मोज़ाम्बिक और भारत सरकार के लिए कृषि और जलीय कृषि अनुसंधान और मत्स्य पालन पर एक सलाहकार के रूप में भी सक्रिय रहे हैं। वे राजीव गांधी जलजीव पालन केंद्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्य हैं, और उन्हें राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के प्रतिष्ठित फेलो के रूप में चुना गया था।

डा गुप्ता का हमारे संस्थान के साथ बहुत जुड़ाव रहा है। वे हमारे कई अनुसंधान समितियों के अध्यक्ष रहे और संस्थान के दिशा-निर्देश बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

'मत्स्य पालन और जलीय कृषि में जल प्रबंधन' पर राष्ट्रीय परामर्शी बैठक

दिनांक 23-24 जून 2006 को राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी, एनएएससी परिसर, नई दिल्ली में इनलैंड फिशरीज सोसाइटी ऑफ इंडिया, बैरकपुर और एसोसिएशन ऑफ एक्वाकल्चरिस्ट्स, भुवनेश्वर ने भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर और भाकृअनुप-केन्द्रीय मीठा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान, भुवनेश्वर के सहयोग से 'मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर में जल प्रबंधन' पर एक राष्ट्रीय परामर्शी बैठक का आयोजन किया। इस बैठक का उद्देश्य स्थायी मत्स्य पालन के लिए खुले जल संसाधनों के विवेकपूर्ण प्रबंधन की योजना बनाना, जलीय कृषि और एकीकृत खेती के लिए उपलब्ध जल संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए रणनीति तैयार करना, अंतर्देशीय मत्स्य पालन क्षेत्र में पानी की मांग को पूरा करने के लिए अनुसंधान आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना और प्रबंधित और खुले जल पारिस्थितिक तंत्र में जैविक तत्वों का उपयोग करके अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिए दिशानिर्देश विकसित करना। इस बैठक में मात्स्यिकी क्षेत्र के दिग्गज वैज्ञानिक जैसे, डॉ एम वी गुप्ता; डॉ. एस.जेड. कासिम, पूर्व सदस्य, योजना आयोग; डॉ. मंगला राय, सचिव, डेयर और महानिदेशक, भाकृअनुप; डॉ. एस. अय्यप्पन; डॉ. एन. सारंगी; डॉ. के के वास, निदशक, सिफरी और डॉ. जे के. जेना उपस्थित थे।

पुरस्कार एवं सम्मान

विश्व खाद्य पुरस्कार

भारतीय वैज्ञानिक डा मोदादुगु वी गुप्ता को ग्रामीण क्षेत्रों में पोषण बढ़ाने के उनके काम के लिए 2005 के लिए प्रतिष्ठित विश्व खाद्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। पहला विश्व खाद्य पुरस्कार 1986 में एम एस स्वामीनाथन को दिया गया था। डा गुप्ता छठे भारतीय हैं जिन्हें पोषण में सुधार, आय में पर्याप्त वृद्धि करने और दस लाख से अधिक महिलाओं को सशक्त बनाने में उनके काम के लिए यह प्रतिष्ठित मान्यता मिली है। भूख, कुपोषण और ग्रामीण गरीबी को कम करने के उद्देश्य से भोजन और कृषि में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए नोबेल पुरस्कार विजेता नॉर्मन बोरलॉग द्वारा 1986 में बनाया गया था। पुरस्कार में ओहियो के गवर्नर द्वारा एक उद्घोषणा और एक प्रशस्ति पत्र, शाऊल बास द्वारा बनाई गई एक मूल मूर्ति और 250,000 अमरीकी डालर का नकद पुरस्कार प्रदान की जाती है।

सुनहाक शांति पुरस्कार, 2015

डॉ एम वी गुप्ता को वर्ष 2015 को पहला सुनहाक शांति पुरस्कार, एक्वाकल्चरल क्रांति का नेतृत्व करने, दुनिया के सबसे गरीब लोगों का जीवन और आहार को समृद्ध करने के लिए सम्मानित किया गया। सुनहाक शांति पुरस्कार उन लोगों को प्रदान किया जाता है जिन्हें शांति और मानव विकास में योगदान देने वालों के रूप में पहचाना जाता है और स्वीकार किया जाता है। यह नोबल शांति पुरस्कार के विकल्प के रूप में अपने आदर्शों और उपलब्धियों का सम्मान करने के लिए सन म्युंग मून की पत्नी हाक जा हान मून के आदेश पर स्थापित किया गया था। डॉ एम वी गुप्ता को यह पुरस्कारकिरिबाती के पूर्व राष्ट्रपति श्री अनोट टोंग के साथ मिला था ।

पद्मश्री पुरस्कार 2023

डॉ एम वी गुप्ता को वर्ष 2023 के पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान उन्हे विज्ञान एवं प्रद्योगिकी वर्ग के अंतर्गत दिया गया है। संस्थान डॉ गुप्ता को उनके इस उपलब्धि पर हार्दिक शुभकामनाएँ देता है। अतः विश्व में मछली आपूर्ति में सुधार के लिए समर्पित, डॉ गुप्ता ने समान विचारधारा वाले वैज्ञानिकों, प्रबंधकों और नेताओं का एक वैश्विक नेटवर्क बनाया है और लाखों लोग उनके काम से प्रभावित और लाभी हुए है। वर्तमान में, वह एग्री बायोटेक फाउंडेशन की कार्यकारी समिति के सदस्य हैं।

आरटीएम नागपुर विश्वविद्यालय में आयोजित 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में सीआईएफआरआई

"महिला सशक्तिकरण के साथ सतत विकास के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी" विषय पर 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का आयोजन 3-7 जनवरी 2023 को राष्ट्रसंत तुकडोजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर में किया गया। इसका उद्घाटन सत्र भारत के माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 3 जनवरी 2023 को 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस का वर्चुअल उद्घाटन किया।

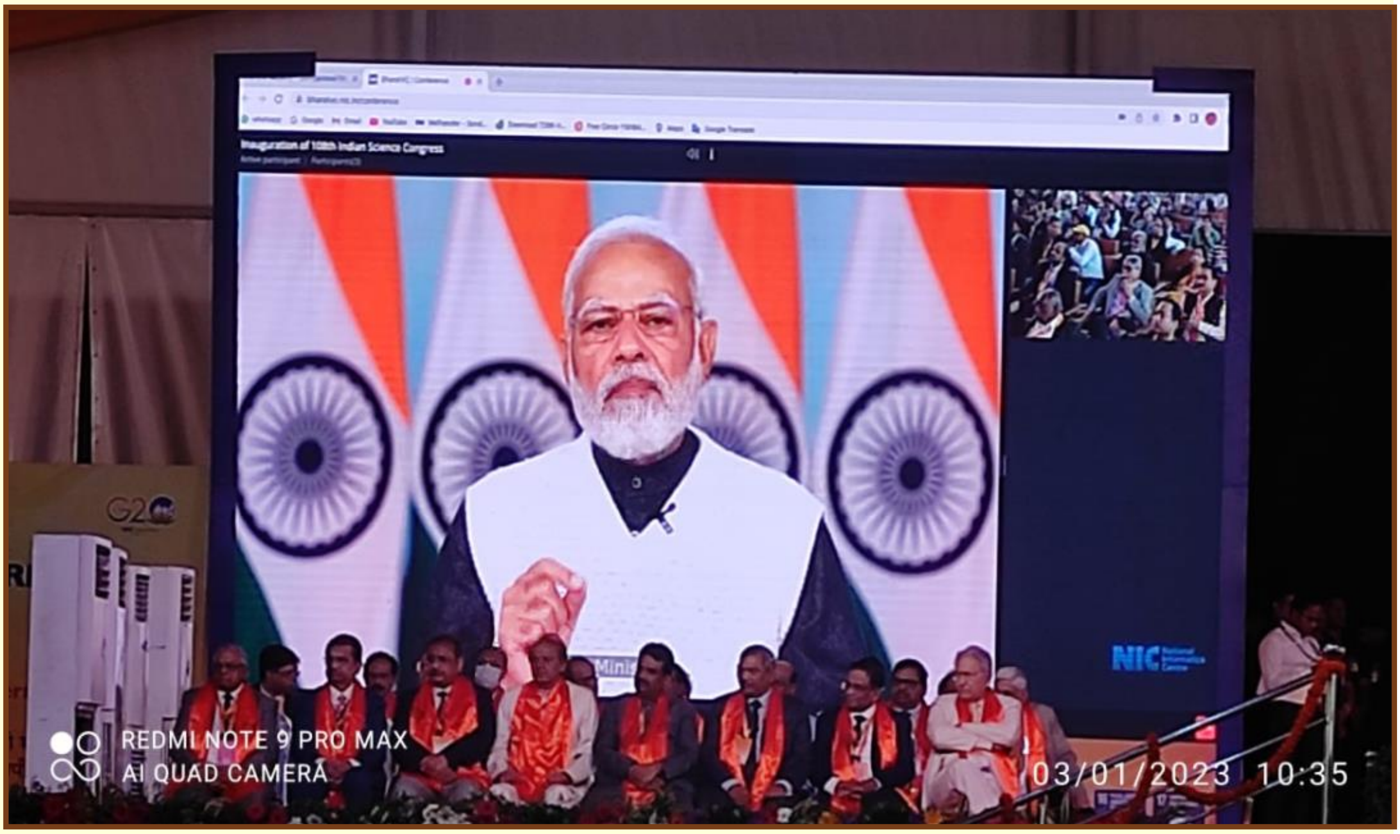

सभा को संबोधित करते हुए, प्रधानमंत्री ने अगले 25 वर्षों में भारत के विकास की कहानी में भारत की वैज्ञानिक शक्ति की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा "जब विज्ञान में जुनून के साथ राष्ट्रीय सेवा की भावना का संचार होता है, तो परिणाम अभूतपूर्व होते हैं। मुझे यकीन है, भारत का वैज्ञानिक समुदाय हमारे देश के लिए एक ऐसी जगह सुनिश्चित करेगा, जिसका वह हमेशा से हकदार था",। उन्होंने जोर देकर कहा, "हमारी सोच सिर्फ यह नहीं है कि हमें विज्ञान के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना चाहिए बल्कि महिलाओं के योगदान से विज्ञान को भी सशक्त बनाना चाहिए। महिलाओं की बढ़ती भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि देश में महिलाएं और विज्ञान दोनों प्रगति कर रहे हैं"। प्रधानमंत्री ने कहा, "विज्ञान के प्रयास महान उपलब्धियों में तभी बदल सकते हैं जब वे प्रयोगशाला से निकलकर जमीन पर पहुंचें, और उनका प्रभाव वैश्विक से लेकर जमीनी स्तर तक पहुंचे, जब इसकी परिधि पत्रिका से लेकर जमीन (जमीन, रोजमर्रा की जिंदगी) तक हो और जब परिवर्तन शोध से वास्तविक जीवन में दिखाई देता है।

इस दौरान संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास, भारतीय विज्ञान कांग्रेस संस्था की कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में उद्घाटन सत्र के दौरान अन्य अतिथि और गणमान्य व्यक्तियों के साथ मंच पर उपस्थित थे।

पशु चिकित्सा और मत्स्य विज्ञान अनुभाग

डॉ.बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी को पशु चिकित्सा और मत्स्य विज्ञान अनुभाग के उद्घाटन सत्र में 4 जनवरी 2023 को जी.के. मन्ना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर निदेशक महोदय ने "भारत में मछली रोग और पर्यावरणीय प्रभाव" पर व्याख्यान दिया उन्होंने वैज्ञानिक के रूप में पिछले 25 वर्षों के अपने काम और उपलब्धि को दर्शाते हुए जी के मन्ना पुरस्कार स्मारक व्याख्यान दिया।

डॉ. बि. के. दास ने 4 जनवरी 2023 को दो प्रतिष्ठित वक्ताओं, डॉ. किनी, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ़ सिंगापुर और डॉ. शम्सी, चार्ल्स स्टुअर्ट यूनिवर्सिटी, ऑस्ट्रेलिया द्वारा विदेशी आमंत्रित व्याख्यान के सत्र की अध्यक्षता भी की।

5 जनवरी 2023 को, डॉ.बि.के. दास ने "भारत में खाद्य सुरक्षा के लिए अंतर्देशीय मत्स्य पालन का सतत विकास: प्रौद्योगिकी, स्थिति, क्षमता, मुद्दे और चुनौतियां" विषय पर आमंत्रित व्याख्यान दिया।

6 जनवरी 2023 को, डॉ.बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी अनुभाग के समापन सत्र के सम्मानित अतिथि थे।

किसान विज्ञान कांग्रेस

5 जनवरी 2023 को किसान विज्ञान कांग्रेस का उद्घाटन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ.बि.के. दास, निदेशक थे। मुख्य अतिथि के रूप में अपने संबोधन में डॉ. बसंत कुमार दास ने कहा, "देश ने खाद्यान्न उत्पादन में जबरदस्त प्रगति की है और हमारे किसानों के सावधानीपूर्वक प्रयासों ने इसमें सबसे बड़ा योगदान दिया है, हालांकि, यह देखा गया है कि किसानों की आर्थिक स्थिति ज्यादा सुधार नहीं हुआ है। इसलिए कृषि की प्रगति के लिए आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी का प्रभावी उपयोग महत्वपूर्ण है।" उन्होंने जोर देकर कहा कि किसानों को बाजार तकनीकों के बारे में जागरूक होने की जरूरत है। किसान विज्ञान कांग्रेस के तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. अर्चन कांति दास, प्रधान वैज्ञानिक ने किया।

सतत मत्स्य पालन, जलीय कृषि और जलवायु परिवर्तन पर पूर्ण सत्र

डॉ.बि. के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी की अध्यक्षता में सतत मात्स्यिकी, जलीय कृषि और जलवायु परिवर्तन पर 5 जनवरी को पूर्ण सत्र का आयोजन किया गया। डॉ. जे.के. जेना, उपमहानिदेशक (मत्स्य विज्ञान), आईसीएआर ने "सस्टेनेबल फिशरीज एंड एक्वाकल्चर: इंपैक्ट ऑफ क्लाइमेट चेंज एंड मिटिगेशन उपायों" विषय पर प्रस्तुति दी। डॉ.बि. के. दास ने "सतत विकास लक्ष्यों और महिला सशक्तिकरण के लिए अंतर्स्थलीय मत्स्य पालन और एक्वाकल्चर" विषय पर प्रस्तुति दी।

साइंस कम्युनिकेटर्स मीट

108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में 5-6 जनवरी 2023 को 14वें साइंस कम्युनिकेटर्स मीट (विज्ञान संचार सम्मेलन) का आयोजन किया गया। बैठक का उद्घाटन सीएसआईआर-नीरी, नागपुर के निदेशक डॉ. अतुल वैद्य ने किया। आमंत्रित वक्ता के रूप में गणेश चंद्रा ने आईसीएआर-सिफरी का प्रतिनिधित्व किया। उन्होंने "सतत अंतर्स्थलीय मत्स्य विकास के लिए संचार" पर अपना शोध प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संचारकों को 1) परामर्श और केंद्रित समूह संचार का उपयोग करना चाहिए और 2) उपज दृश्यता के साथ प्रौद्योगिकियों/प्रथाओं के लिए कई चैनलों का उपयोग करना चाहिए। (प्रभावी संचार रणनीति के लिए)। बेहतर प्रौद्योगिकियों पर मछुआरों के समुदाय के लिए प्रभावी संचार अंततः मत्स्य पालन क्षेत्र में सतत विकास और गरीबी उन्मूलन और भूख को समाप्त करने के एसडीजी लक्ष्यों में मदद करेगा।

आईसीएआर-सिफरी का 108वें भारतीय विज्ञान कांग्रेस में वैज्ञानिकों, तकनीकी अधिकारियों और कई शोध छात्रों के दल के साथ प्रतिनिधित्व किया गया था। मीडिया ने 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस में भाकृअनुप-सिफरी की गतिविधियों को भी दिखया गया है।

7 जनवरी 2023 को समापन सत्र के दौरान, डॉ.बि.के. दास को 3-7 जनवरी 2024 को आयोजित होने वाली 109वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के पशु पशु चिकित्सा और मत्स्य विज्ञान खंड के अनुभागीय अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित किया गया।

आईसीएआर- सिफ़री ने 10 जनवरी 2023 को विश्व हिन्दी दिवस मनाया

10 जनवरी 2023 को पूरे विश्व में विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है। 'आईसीएआर – एनईपीपीए' परियोजना के प्रथम तकनीकी सलाहकार समिति की बैठक के उद्बोधन समारहो में सभी को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक डॉ. बि. के. दास ने सभी का स्वागत किया और सभी को विश्व हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ दी । उन्होनें विश्व हिन्दी दिवस के उद्देश्य को व्यक्त किया तथा सिफ़री द्वारा हिन्दी के प्रसार में किए जा रहें कार्यों पर प्रकाश डाला। उन्होनें बताया कि हमारे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की अगुवाई में हिन्दी को वैश्विक आयाम हासिल हुआ है। उनके अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि आज लोगों ने हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में हिन्दी की प्रासंगिकता को स्वीकार किया है, और इसका दायरा समस्त अहिन्दीभाषी राज्यों में द्रुत गति से बढ़ा है। और हम सभी भारत के निवासियों का यह कर्तव्य हैं कि हम हमारे प्रधानमंत्री जी द्वारा दिखाए गए पथ पर चले और हिन्दी को और आगे ले जाए । साथ ही सिफ़री में 4-10 जनवरी, 2023 के दौरान बिहार के सीतामढ़ी के मत्स्य कृषकों को 'अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी प्रबंधन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम' के समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. प्राणजीब चक्रबोर्ती, भूतपूर्व एएसआरबी सदस्य मौजूद थे। इसी सत्र में संस्थान के निदेशक, डॉ. बि. के. दास ने सभी को विश्व हिन्दी दिवस की शुभकामनाएँ दी और कहा कि सिफ़री देश के सभी क्षेत्रों के लोगों के साथ कार्य कर रहा हैं और संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का ही प्रयोग कर रहा हैं, वैज्ञानिक और तकनीकी ज्ञान को जन मानस तक सरल भाषा में पहुंचाना ही सिफ़री का उद्देश्य हैं । और हर देशवासी को इस महान कार्य से जुड़ने के लिए उन्होनें उत्साहित किया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर में कृषि पर आईसीएआर-नेटवर्क कार्यक्रम (एनईपीपीए) की पहली तकनीकी सलाहकार समिति (टीएसी) की बैठक का आयोजन

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 10-11 जनवरी, 2023 के दौरान मुख्यालय बैरकपुर में आईसीएआर-नेटवर्क प्रोग्राम ऑन प्रेसिजन एग्रीकल्चर (एनईपीपीए) की पहली तकनीकी सलाहकार समिति (टीएसी) की बैठक आयोजित की।

डॉ. एस. के. चौधरी, उपमहानिदेशक(एनआरएम), आईसीएआर, आईसीएआर-एनईपीपीए कार्यक्रम की संचालन समिति के अध्यक्ष हैं। कार्यान्वयन के लिए तकनीकी सलाहकार समिति का गठन किया गया है जिनमें आईसीएआर, आईआईटी और विश्वविद्यालयों के बारह प्रतिष्ठित विशेषज्ञ शामिल है। डॉ. अमिताभ बंद्योपाध्याय तकनीकी सलाहकार समिति के अध्यक्ष हैं। इस कार्यक्रम के तहत आईसीएआर के सोलह संस्थान एक साथ काम कर रहे हैं।बैठक का उद्घाटन 10 जनवरी, 2023 को हुआ। आईसीएआर-सिफरी के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने सभी तकनीकी सलाहकार समिति के सदस्यों और विभिन्न आईसीएआर संस्थानों के प्रतिभागियों का स्वागत किया।

डॉ. अनिल राय, सहायक हानिदेशक (आईसीटी), आईसीएआर और आईसीएआर-एनईपीपीए कार्यक्रम के समन्वयक के तौर पर इसके वित्त पोषण पैटर्न के बारे में जानकारी दी। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कार्य योजनाओं के साथ-साथ कार्यक्रम के परिणाम की गुणवत्ता में सुधार के लिए इस बैठक से महत्वपूर्ण सलाह सामने आनी चाहिए।

डॉ. आर.एन. साहू, प्रोग्राम लीडर (आईसीएआर-एनईपीपीए) ने एनईपीपीए

कार्यक्रम की संपूर्ण अवधारणाओं, इसके उद्देश्यों और भविष्य की संभावनाओं को सबके सामने प्रस्तुत किया। उन्होंने प्रत्येक कार्य योजनाओं और इनकी प्रगति के बारे में भी चर्चा की।

प्रोफेसर जे.आदिनारायण, आईआईटी बॉम्बे और टीएसी सदस्य ने बैठक की अध्यक्षता की कहा कि समस्याओं को हल करने के लिए सही तकनीक के चयन पर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने बेंचमार्क डेटासेट तैयार करने की और इसे भविष्य में जनता के लिए उपलब्ध करने की सलाह दी ।

टीएसी सदस्य डॉ. प्रणजीब कुमार चक्रवर्ती, पूर्व सदस्य, एएसआरबी; डॉ कंचन सिंह, पूर्व एडीजी (इंजीनियरिंग), आईसीएआर; डॉ राजीव श्रीवास्तव, पूर्व प्रमुख, रिमोट सेंसिंग डिवीजन, एनबीएसएसएलयूपी, आईसीएआर; डॉ. एम. प्रभाकर, पूर्व प्रमुख, फसल उत्पादन आईसीएआर-आईआईएचआर, बैंगलोर; डॉ. ए.जी. पोन्नैया, पूर्व निदेशक, आईसीएआर-सीबा और आईसीएआर-एनबीएफजीआर, आईसीएआर; प्रो अब्दुल समद, पूर्व डीन और निदेशक एमएएफसीयू, नागपुर ने मूल्यवान सुझाव दिया। उनके सुझाव मुख्य रूप से नए विकास से पहले मौजूदा प्रौद्योगिकी के मूल्यांकन पर केंद्रित थे, जैसे उत्पादन प्राप्त करने पर जोर, प्रौद्योगिकियों का एकीकरण, कीट और रोगों के संवेदन के लिए ध्वनिक उपकरणों का विकास, मजबूत पूर्वानुमान मॉडल का विकास, अनुसंधान के लिए उपयुक्त साइट चयन आदि।

टीएसी के सदस्य प्रो. संतनु चौधरी, निदेशक, आईआईटी-जोधपुर और डॉ. एम. प्रभाकर पूर्व प्रमुख, फसल उत्पादन, आईसीएआर-आईआईएचआर, बैंगलोर ऑनलाइन में शामिल हुए और एकत्रित की गई डेटा को जनता के लिए उपलब्ध कराने के लिए उपयुक्त अवसर जैसी अपनी बहुमूल्य टिप्पणियां व्यक्त कीं। देश भर में विशेषज्ञों की संख्या, विकसित तकनीक का सत्यापन और छोटे पैमाने की खेती के लिए इन्हें लागू करना चाहिये तथा आउटपुट विकसित करने के लिए आईसीएआर सीधे स्टार्टअप से जुड़ सकता है।

उद्घाटन सत्र डॉ जॉयदीप मुखर्जी, आईसीएआर-आईएआरआई के औपचारिक धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुआ। उद्घाटन के बाद, आईसीएआर के सोलह संस्थानों के पीआई ने अपनी परियोजना प्रगति प्रस्तुत की, जिसके बाद गहन चर्चा हुई।

11 जनवरी, 2023 को डॉ. एस.के. चौधरी, उप महानिदेशक(एनआरएम), आईसीएआर ऑनलाइन रूप से बैठक में शामिल हुए और उन्होंने कार्यक्रम की भावी संभावनाओं और आईसीएआर की अपेक्षाओं के बारे में उल्लेख किया। उन्होंने टीम के सदस्यों को क्षेत्र में लागू करने योग्य व्यवहार्य समाधान के लिए प्रोत्साहित किया।

सभी भागीदार संस्थानों के टीम सदस्य ऑनलाइन या ऑफ़लाइन रूप में सक्रिय रूप से भाग लिया।

आईसीएआर-सिफरी ने 12-13 जनवरी 2023 को वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन किया

आईसीएआर-सिफरी ने अपने मुख्यालय बैरकपुर में 12 और 13 जनवरी, 2023 के दौरान वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता का आयोजन किया। उद्घाटन समारोह में संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने शांति के प्रतीक के रूप में कबूतर को छोड़ कर वार्षिक खेलों का उद्घाटन किया। उन्होंने

खेल-कूद और स्वस्थ जीवन जीने के लिए उनके महत्व के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने संस्थान में आयोजित खेल-कूद प्रतियोगिता पर भी प्रकाश डाला और संस्थान के सभी सदस्यों को इस दो दिवसीय कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके अलावा उन्होंने सभी को

प्रोत्साहित करने के लिए रस्साकशी प्रतियोगिता में भी हिस्सा लिया। संस्थान में 12 जनवरी को वार्षिक क्रीडा प्रतियोगिता के उद्घाटन कार्यक्रम के साथ ही, महान दार्शनिकों और आध्यात्मिक नेताओं में से एक, स्वामी विवेकानंद की जन्म जयंती मनाई गई जिसे राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में भी जाना जाता है।

इस अवसर पर सभी प्रभारी विभागाध्यक्ष, विभिन्न प्रकोष्ठ के प्रभारी, प्रशासनिक प्रमुख और वित्त एवं लेख अधिकारी उपस्थित थे । खेल प्रतियोगिता का उद्घाटन रस्साकशी से हुआ, जिसके बाद पुरुषों और महिलाओं के लिए दो अलग-अलग श्रेणियों (>पुरुषों के लिए 45 वर्ष) में 100 मीटर की दौड़ आयोजित की गई। क्रिकेट और वॉलीबॉल जैसी टीम स्पर्धाओं सहित पुरुषों और महिलाओं दोनों प्रतिभागियों के लिए विभिन्न इनडोर (शतरंज, बैडमिंटन और कैरम) और आउटडोर (एथलेटिक्स) खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 13 जनवरी 2023 को संस्थान के कृष्णा गार्डन में विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किया गया। डॉ. दिबाकर भक्त, श्री संथाना कुमार वी., श्री कौशिक मंडल, श्री पी.आर. महता, श्री डी. सिंघा, श्री एस. बनर्जी, और श्री एम. रॉय ने सिफ़री रिक्रियसन क्लब और विस्तार और प्रशिक्षण कक्ष के सहयोग से समग्र प्रतियोगितायों का समन्वय किया।

मात्स्यिकी विज्ञान में आईपीआर मुद्दों पर सिफ़री द्वारा कार्यशाला

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर, कोलकाता ने 18 जनवरी 2023 को "मत्स्य विज्ञान में आईपीआर मुद्दों" पर एक कार्यशाला का आयोजन किया, जिसका उद्देश्य इस संस्थान के वैज्ञानिकों को प्रौद्योगिकियों के विकास और व्यावसायीकरण में आईपी संरक्षण के प्रति संवेदनशील बनाना था। कार्यशाला की अध्यक्षता निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने किया।

श्री गणेश चंद्र, प्रभारी, आईटीएमयू ने सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और इस कार्यशाला के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कहा कि आईपीआर किसी व्यक्ति की बौद्धिक रचना को सुरक्षा प्रदान करता है और प्रयासों को मान्यता देता है। यह नवीन प्रथाओं को बढ़ावा देने के लिए उपलब्ध एक उपकरण है।

संस्थान के निदेशक, डॉ. बसंत कुमार दास ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि हमारा फोकस पेटेंट, कॉपीराइट, डिजाइन और अन्य माध्यमों से हमारे शोध आउटपुट के आईपी की रक्षा करने पर होना चाहिए। उन्होंने कहा कि माननीय सचिव डेयर और महानिदेशक, आईसीएआर ने इस बात पर जोर दिया है कि प्रत्येक वैज्ञानिक के पास कम से कम एक उत्पाद/प्रौद्योगिकी या पेटेंट होना चाहिए। उन्होंने कार्यशाला में "आईपीआर और आईसीएआर-सिफरी की प्रौद्योगिकियों" पर एक व्याख्यान दिया। पिछले पांच वर्षों में आईसीएआर-सिफरी द्वारा 7 पेटेंट, 4 औद्योगिक डिजाइन और 8 ट्रेडमार्क दायर किए गए हैं। संस्थान ने अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी क्षेत्र में 7 तकनीकों का व्यावसायीकरण और लाइसेंस दिया है और आईसीएआर की वाणिज्यिक शाखा एग्रीनोवेट इंडिया लिमिटेड में छह व्यावसायीकरण पर हैं।

डॉ. यशवंत देव पंवार, प्रमुख पेटेंट सुविधा केंद्र, प्रौद्योगिकी सूचना पूर्वानुमान और मूल्यांकन परिषद, डीएसटी, फरीदाबाद ने अपने ऑनलाइन संबोधन में कहा कि अनुसंधान संस्थान में आईपीआर का संरक्षण और प्रबंधन सर्वोपरि है। पिछले दस वर्षों में, पेटेंट, कॉपीराइट, ट्रेडमार्क, डिजाइन और जीआई के पंजीकरण के माध्यम से आईपीआर के प्रबंधन और संरक्षण की दिशा में सरकारी संस्थानों द्वारा प्रयास किए गए हैं। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि आईसीएआर के दिशानिर्देश, आईपीआर की सुरक्षा और लाइसेंसिंग के लिए मजबूत ढांचे में से एक हैं। उन्होंने कहा कि आईसीएआर-सिफरी का आईपीआर पोर्टफोलियो उत्कृष्ट है। उन्होंने भारत में अनुसंधान एवं विकास संस्थान में आईपी प्रबंधन पर

व्याख्यान दिया। इस व्याख्यान में उन्होंने राष्ट्रीय आईपीआर नीति पर जोर दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कानूनी, आर्थिक आदि सहित आईपीआर के कई लाभ हैं।

आईसीएआर, नई दिल्ली की आईपी और टीएम यूनिट डॉ. विक्रम सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आईसीएआर-सिफरी उन पांच संस्थानों में से एक है, जिनके पास कई परामर्श और अनुबंध अनुसंधान परियोजनाएं हैं। उन्होंने कहा कि आईसीएआर में आईपीआर वर्ष 2000 की शुरुआत में स्थापित किया गया था और वर्तमान में प्रत्येक आईसीएआर संस्थान में संस्थान स्तर पर आईपीआर संरक्षण की देखभाल करने वाली संस्थान प्रौद्योगिकी प्रबंधन इकाई है। उन्होंने "आईसीएआर में आईपीआर दिशानिर्देश और प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण प्रक्रिया" पर व्याख्यान दिया। उन्होंने कहा कि कृषि से संबंधित पहला पेटेंट वर्ष 1921 में और आईसीएआर संस्थान से पहला पेटेंट वर्ष 1951 में दायर किया गया था। उन्होंने आईसीएआर की आईपीआर प्रबंधन प्रौद्योगिकी व्यावसायीकरण प्रक्रिया और स्टार्ट अप के बारे में भी जानकारी दी।

जेडटीएमसी-एबीआई, आईसीएआर-आईएआरआई के पंजीकृत पेटेंट एजेंट, डॉ. साक्षी गुप्ता ने पेटेंट प्रारूपण और लेखन प्रक्रिया पर व्याख्यान दिया।

संस्थान में 74वे गणतंत्र दिवस का पालन

संस्थान मुख्यालय तथा इसके क्षेत्रीय केंद्रों में दिनांक 26 जनवरी 2023 को मुख्यालय, बैरकपुर और क्षेत्रीय केंद्रों/स्टेशनों के साथ 74वां गणतंत्र दिवस मनाया गया।

प्रारंभ में डॉ. बि.के. दास, निदेशक, भाकृअनुप-सिफरी ने गणतंत्र दिवस और बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर उपस्थित लोगों को बधाई दी है। उन्होंने विश्व शांति पुरस्कार विजेता डॉ. एम.वी. गुप्ता को इस साल के पद्मश्री पुरस्कार सम्मानित होने पर हार्दिक बधाई दी। उन्होंने कहा कि डॉ गुप्ता का हमारे संस्थान के साथ संबंध बहुत दिनों का है। आगे उन्होंने कहा कि हमें भगवत गीता के एक संस्कृत उद्धरण, "कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन" (अर्थात परिणामों के बारे में सोचे बिना कड़ी मेहनत करना) को ध्यान में रख कर अपना काम करना चाहिए। पिछले एक साल में, सिफरी ने कई उपलब्धियां हासिल की है जैसे: नमामि गंगे परियोजना को संयुक्त राष्ट्र ने विश्व पारिस्थितिकी संरक्षण प्रयासों में एक अग्रदूत परियोजना के रूप में मान्यता दी है, जो हम सभी सिफरी वालों के लिए गर्व की बात है। हमारे संस्थान से भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् को बहुत उम्मीदें हैं अतः हमें अपनी प्रतिष्ठा और सफलता को स्तर ऊंचा पर बनाए रखने के लिए कड़ी मेहनत करनी होगी। उन्होंने आगे कहा कि मानव संसाधन विकास प्रबंधन एक अत्यंत कठिन कार्य है और वर्तमान समय में कर्मचारियों की संख्या स्वीकृत संख्या की तुलना में बहुत कम है। इसलिए अपने कर्मचारियों को विदेशों में प्रशिक्षण के लिए भेजने के बजाय, हम दूसरे देशों के विशेषज्ञों को आमंत्रित कर सकते हैं। तकनीकी कर्मचारियों को मत्स्य पालन के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने करियर में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। उन्होंने आगे कहा कि हमें अपने काम के प्रति समय की पाबंदी, ईमानदारी और समर्पण बनाए रखना चाहिए। सीआईएफआरआई के पास पर्याप्त संसाधन, शांत वातावरण, हरियाली आदि हैं जो किसी व्यक्ति के समग्र विकास में योगदान कर सकते हैं। उन्होंने अंत में कहा कि "हमें अपने स्वास्थ्य की अच्छी देखभाल करनी चाहिए क्योंकि कोविड की दस्तक फिर से सुनाई दे रही है"।संस्थान मुख्यालय तथा इसके क्षेत्रीय केंद्रों में दिनांक 26 जनवरी 2023 को मुख्यालय, बैरकपुर और क्षेत्रीय केंद्रों/स्टेशनों के साथ 74वां गणतंत्र दिवस मनाया गया।

एनएबीएल प्रयोगशाला के लिए मूल्यांकनकर्ता का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

17-21 जनवरी, 2023 को आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर में एनएबीएल (परीक्षण और अंशांकन प्रयोगशालाओं के लिए राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड) द्वारा एक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम आयोजित किया गया। इस 5 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में आईसीएआर-सिफरी, बैरकपुर की तरह 12 आईसीएआर संस्थान जैसे ; आईसीएआर-सीफा, भुवनेश्वर; आईसीएआर -डीएफएमडी, भुवनेश्वर; आईसीएआर-सीआरआईजेएफ, बैरकपुर; आईसीएआर-एनआईएनएफटी, कोलकाता; आईसीएआर-आरसीईआर, रांची; आईसीएआर-एनआरसी पिग, गुवाहाटी; आईसीएआर-एनईएच, बारापानी; आईसीएआर-एमजीआईएफआरआई, मोतिहारी; आईसीएआर-आईआईडब्ल्यूएम, भुवनेश्वर; आईसीएआर-सीआईडब्ल्यूए, भुवनेश्वर; आईसीएआर-निसा, रांची से कुल 22 वैज्ञानिक ने भाग लिया। प्रशिक्षण का उद्घाटन संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने किया जिसमें एनएबीएल से, डॉ. अविजीत दास, वरिष्ठ निदेशक; डॉ. पंकज गोयल, उप. निदेशक; वरिष्ठ संकाय डॉ. आर.के. मंडल एवं श्रीबि. सिंह विशेषज्ञ के रूप में उपस्थित थे। डॉ. एस.के. नाग, सिफ़री के प्रधान वैज्ञानिक और विभागीय प्रधान ने नोडल अधिकारी के रूप में और आईपी एंड टीएम इकाई और आईसीएआर के प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. विक्रम सिंह, वरिष्ठ वैज्ञानिक, ने कार्यक्रम का समन्वय किया।

भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान ने विश्व आर्द्रभूमि दिवस के अवसर पर 'आर्द्रभूमि में सतत मत्स्य प्रबंधन' पर विचार-मंथन सत्र का आयोजन किया

विश्व आर्द्रभूमि दिवस 2023 के अवसर पर, भाकृअनुप-केन्द्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, बैरकपुर ने 2 फरवरी 2023 को संस्थान के क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी में हाइब्रिड मोड में 'आर्द्रभूमि में सतत मत्स्य प्रबंधन' पर विचार-मंथन सत्र का आयोजन किया। इस वर्ष का थीम था 'आर्द्रभूमि का पुनरुद्धार का सही समय'।

विभिन्न संगठन जैसे असम और पश्चिम बंगाल के मत्स्य विभाग, बाढ़ के मैदानी आर्द्रभूमि (बील) के हितधारक; असम मत्स्य विकास निगम लिमिटेड; कॉलेज ऑफ फिशरीज (एएयू), राहा; असम राज्य आर्द्रभूमि प्राधिकरण; गुवाहाटी विश्वविद्यालय; राष्ट्रीय मत्स्य विकास बोर्ड, एनईआरसी, गुवाहाटी; पर्यावरण और वन विभाग, असम सरकार; असम कृषि व्यवसाय और ग्रामीण परिवर्तन परियोजना (एपीएआरटी); वर्ल्डफिश; आरण्यक (एनजीओ), और प्रगतिशील बील मछुआरों/पट्टेदारों की संस्था ने इस दिन भर चलने वाले कार्यक्रम में भाग लिया।

डॉ. दीपेश देबनाथ, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने ऑफलाइन और ऑनलाइन दोनों मोड में उपस्थित अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया और सत्र के बारे में जानकारी दी।

संस्थान के निदेशक डॉ. बि.के. दास ने आर्द्रभूमि द्वारा प्रदान की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं का संक्षेप में मूल्यांकन किया, जो स्थानीय लोगों के लिए आजीविका का साधन हैं। उन्होंने उन आर्द्रभूमियों के बारे में चिंता जताई जिनका संपर्क नदियों से ख़त्म हो रहा है जलछेत्र से मिटटी का ह्रास तथा सुछ्मजीवों समुदायों और प्रजातियों की हानि हो रही है। उन्होनें बताया की आर्द्रभूमि के सामने आने वाले मुद्दों को सुलझाने के लिए एक रणनीतिक योजना की आवश्यकता है।

डॉ. यू.के. सरकार, निदेशक, आईसीएआर-एनबीएफजीआर, लखनऊ ने आर्द्रभूमि को सही रखने और आर्द्रभूमि से लुप्त हो चुकी मछली प्रजातियों की पुन:स्थापना की आवश्यकता पर बल दिया। श्री राकेश कुमार, आईएएस, आयुक्त एवं सचिव, मत्स्य पालन, असम सरकार, ने जोर देकर कहा कि आर्द्रभूमि संरक्षण और मछुआरों की भलाई के साथ स्वच्छ जल प्राथमिकता होनी चाहिए। श्री पी. बोरकाकती, एसीएस, एमडी, एएफडीसी लिमिटेड, असम ने असम की आर्द्रभूमि और एएफडीसी लिमिटेड द्वारा किए जा रहे कार्य के बारे में बात की। उन्होंने आईसीएआर-सिफरी द्वारा उनकी विकासात्मक परियोजनाओं में दी गई तकनीकी विशेषज्ञता का उल्लेख किया।

डॉ. ए.के. दास, जलाशय और आर्द्रभूमि प्रभाग के प्रमुख, भाकृअनुप-सिफ़री, बैरकपुर ने सुझाव दिया कि आर्द्रभूमि के संरक्षण के लिए सहयोगात्मक कार्य किया जाना चाहिए।

डॉ.बि. के. भट्टाचार्य, प्रमुख, भाकृअनुप-सिफ़री क्षेत्रीय केंद्र, गुवाहाटी ने बाढ़ ग्रसित आर्द्रभूमि मात्स्यिकी के संरक्षण और सतत उपयोग से संबंधित प्रमुख मुद्दों को

2 THE ASSAM TRIBUNE, GUWAHATI

Brainstorming on wetland management held

STAFF REPORTER

GUWAHATI, Feb 3: ICAR-Central Inland Fisheries Research Institute (CIFRI), Barrackpore organized a brainstorming session on 'sustainable fisheries management of wetlands' at the ICAR-CIFRI Regional Centre here on February 2 on the occasion of World Wetlands Day (WWD).

The theme for WWD 2023 is 'It's time for wetlands restoration'. Dr BK Das, Director, ICAR-CIFRI, briefly talked about the benefits provided by wetlands, which are means of livelihood for local people. A strategic plan is needed to look into the issues faced by the wetlands, he said.

Dr UK Sarkar, Director, ICAR-NBFGR, Lucknow, stressed the need to restore wetlands and re-establishment of fish species lost from the wetland.

State Fisheries department Commissioner and Secretary Rakesh Kumar said clean water should be priority along with wetland conservation and well-being of the fishers.

Dr AK Das, Head of Reservoir and Wetland Division, ICAR-CIFRI, Barrackpore and Dr B Kalita, Dean, College of Fisheries, Raha, underlined the need for collaboration between different agencies for sustainable development of beels and wetlands. Dr BK Bhattacharjya, Head, ICAR-CIFRI Regional Centre, Guwahati, flagged the major issues concerning conservation and sustainable utilization of floodplain wetland fisheries.

Stakeholders from various organizations concerned namely Departments of Fisheries, Governments of Assam, UP, WB and Manipur; Assam Fisheries Development Corporation Ltd.; College of Fisheries (AAU), Raha; Assam State Wetland Authority; Gauhati University; National Fisheries Development Board, NERC, Guwahati; Department of Environment and Forest, Government of Assam; Assam Agribusiness and Rural Transformation Project (APART); WorldFish, Aaranyak (NGO) and progressive beel fishers/lessees participated in the day-long programme.

All the delegates agreed on the need for conserving the wetlands for production of various goods (including fishes) and ecological services, conservation of these openwater resources, restoration of degraded wetlands, coordinated effort by all stakeholders as well as awareness creation for wetland conservation/restoration.

ASSAM MEDICAL SERVICES CORPO
No.: NHM-43017/229/2022-PROC-NHM/25637/150157
E-TENDER FOR SUPPLY OF MEDICINE RAC

उठाया। तकनीकी सत्र में तेजपुर विश्वविद्यालय के प्रो. डी.सी. बरुआ ने आग्रह किया कि हम सभी को आर्द्रभूमि के लिए जिम्मेदार होना चाहिए और यह समझना चाहिए कि 'कचरा कौन सा फेंकना है और कचरा कहां फेंकना है?'

असम राज्य जैव विविधता बोर्ड की डॉ. ओ सुनंदा देवी ने जैव विविधता विरासत स्थल की पहचान करने के बारे में बताया ताकि कुछ जैव विविधता समृद्ध क्षेत्रों का संरक्षण किया जा सके।

श्री आशिम कु. बोरा, प्रभारी, एनएफडीबी एनईआरसी, गुवाहाटी ने सवाल उठाया कि क्या बील विकास और संरक्षण साथ-साथ चल सकता है। एनएफडीबी की सुश्री डोरोथी का मानना है कि स्थानीय लोगों को आर्द्रभूमि क्षरण और इसके संरक्षण के तरीकों के बारे में जागरुकता दी जानी चाहिए।

गुवाहाटी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. दंडधर सरमा ने क्षेत्र की आर्द्रभूमि में उपलब्ध बेशकीमती देशी सजावटी मछलियों के बारे में चिंता जताई, जिन्हें अवैध रूप से एकत्र और निर्यात किया जा रहा है। कई मछलियाँ खतरे में हैं या लुप्तप्राय हैं या विलुप्त होने के करीब हैं और उन्हें संरक्षित करने की आवश्यकता है। डॉ राजदीप दत्ता, सहायक प्रोफेसर, कॉलेज ऑफ फिशरीज, राहा ने चिंता व्यक्त की कि आर्द्रभूमि से एकत्र की गई कई मछलियों में माइक्रोप्लास्टिक के अवशेष मिले है।

मत्स्य विभाग, वर्ल्डफिश, एपीएआरटी और आरण्यक (स्वयं सेवी संस्थान) के प्रतिनिधियों ने भी आर्द्रभूमि के संरक्षण से संबंधित उनके द्वारा किए गए कार्यों के बारे में बताया। आईसीएआर-सिफरी, छेत्रीय केन्द्र गुवाहाटी के वैज्ञानिक और कर्मचारियों ने प्रतिनिधियों के साथ बातचीत की और सत्र में कुछ सुझाव दिये। सभी प्रतिनिधियों ने विभिन्न वस्तुओं (मछलियों सहित) और पारिस्थितिक सेवाओं के उत्पादन, इन खुले पानी के संसाधनों के संरक्षण, खराब हो रहे आर्द्रभूमि का सुधार , सभी हितधारकों द्वारा समन्वित प्रयास के साथ-साथ आर्द्रभूमि संरक्षण/पुनर्स्थापना हेतु जागरूकता के लिए आर्द्रभूमि के संरक्षण की आवश्यकता पर सहमति व्यक्त की गई ।

मुख्य शोध उपलब्धियां

- गंगा नदी की दो महत्वपूर्ण व्यावसायिक तौर पर महत्वपूर्ण प्रजातियाँ (*रीता रीता* और *नेंदस नेंदस*) की जनसंख्या गतिकी का अध्ययन किया गया है और पाया गया है कि मछली का दोहन इष्टतम स्तर पर है।
- बेग्रिड कैटफ़िश की दो प्रजातियों, *मिस्टस कैवासियस* और *मिस्टस गुलियो* के संपूर्ण माइटोकॉन्ड्रियल जीनोम पर पहली बार जानकारी प्राप्त की गई।
- दिसंबर 2022 के दौरान गंगा नदी के प्रयागराज खंड से अनुमानित मछली लैंडिंग का 7.151 टन था, जो दिसंबर 2021 की तुलना में कुल मछली पकड़ में 18.41 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है।
- नए बांध और बैराज निर्माण के प्रभाव को जानने के लिए बिचुंग नदी की पारिस्थितिकी और मात्स्यिकी के अध्ययन हेतु एक सर्वेक्षण किया गया। दिसंबर 2022 के दौरान पटना में गंगा नदी से आनुमानित मछली लैंडिंग 1.02 टन था, जो नवंबर 2022 की तुलना में 29.11% की वृद्धि दर्शाता है।

बैठकें

- संस्थान के वैज्ञानिकों ने 5-6 जनवरी 2023 को राष्ट्रसंत तुकोडेजी महाराज नागपुर विश्वविद्यालय, नागपुर में 108वीं भारतीय विज्ञान कांग्रेस के साथ आयोजित 14वीं साइंस कम्युनिकेटर्स मीट में भाग लिया।
- संस्थान के निदेशक ने 17 जनवरी 2023 को नई दिल्ली में सिफरी और सी-डैक, कोलकाता द्वारा संयुक्त रूप से विकसित बायोसेंसिंग डिवाइस के प्रौद्योगिकी हस्तांतरण (ट्रांसफर टू टेक्नोलॉजी) समारोह में भाग लिया।
- सिफरी के सहयोग से प्रगत संगणन विकास केंद्र (CDAC), कोलकाता ने दिनांक 17 जनवरी 2023 को नई दिल्ली में जलीय पारिस्थितिक तंत्र (MEAN) में अंतःस्त्रावी विघटनकारी रसायनों का पता लगाने के लिए बायोसेंसिंग सिस्टम के लिए प्रौद्योगिकी का शुभारंभ किया जिसका उद्घाटन इलेक्ट्रॉनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) के सचिव, श्री अलकेश कुमार शर्मा के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस प्रौद्योगिकी को व्यावसायीकरण के लिए आरोग्यम मेडिसॉफ्ट सॉल्यूशन प्राइवेट लिमिटेड को हस्तांतरित किया गया था।

प्रशिक्षण कार्यक्रम

- पिंजरा में मछली पालन प्रबंधन पर आउटरीच गतिविधियों का आयोजन मात्स्यिकी विभाग, भारत सरकार के साथ संयुक्त रूप से किया गया। यह कार्यक्रम दिनांक 26 दिसंबर 2022 को झारखंड के गोगना गांव, मैथन बांध में आयोजित किया गया जिसमें में स्थानीय 55 आदिवासी मछुआरों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 04-10 जनवरी, 2023 के दौरान सीतामढ़ी, बिहार के किसानों के लिए "अन्तर्स्थलीय मत्स्य प्रबंधन" पर मत्स्य पालन विभाग, बिहार सरकार द्वारा प्रायोजित 7 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें बिहार से 29 मछली किसानों ने भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 17-21 जनवरी, 2023 के दौरान NABL असेसर के प्रशिक्षण सत्र का आयोजन किया, जिसमें परिषद के 12 अनुसंधान संस्थानों के 22 प्रतिभागियों ने भाग लिया।
- दिनांक 28 दिसंबर 2022 को सभी क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों सहित आईसीएआर-सिफरी के सभी वैज्ञानिकों ने महानिदेशक, आईसीएमआर की ऑनलाइन प्रस्तुति में भाग लिया
- संस्थान तथा इसके क्षेत्रीय अनुसंधान केंद्रों के सभी वैज्ञानिकों ने दिनांक 12 जनवरी 2023 को महानिदेशक, सीएसआईआर के ऑनलाइन बैठक में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 12-16 जनवरी, 2023 के दौरान सारगाची, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल में धान्यगंगा कृषि विज्ञान केंद्र, सरगाची रामकृष्ण मिशन द्वारा आयोजित तीसरे कृषि समृद्धि मेला-सह-राष्ट्रीय संगोष्ठी 2023 में भाग लिया।
- संस्थान ने दिनांक 15-17 जनवरी, 2023 के दौरान अलुकरनबाढ़, भूपतिनगर, भगवानपुर-द्वितीय, कोंटाई, पूर्व मेदिनीपुर में अलुकरनबाड़ सभा संघ द्वारा आयोजित बजरपुर ग्रामीण प्रदर्शनी-ओ-मेला में भाग लिया।
- सतत एवं स्थायी मत्स्य पालन के लिए पश्चिम बंगाल और झारखंड में विभिन्न स्थानों पर हिल्सा और डॉल्फ़िन के लिए 7 जागरूकता संरक्षण का आयोजन किया गया। इसमें 82 स्थानीय मछुआरों ने भाग लिया।

विविध

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के नाम पर दिनांक 29 दिसंबर 2022 को भारतीय पेटेंट कार्यालय, कोलकाता में "जल में धातुओं प्रदूषण का पता लगाने के लिए सेंसर डिवाइस" नामक एक पेटेंट आवेदन दायर किया गया है। पेटेंट आवेदन संख्या 202231076888 है।
- संस्थान ने दिनांक 2 जनवरी 2023 को गोंगरी और दिनचांग में प्रस्तावित पनबिजली परियोजनाओं के संबंध में अरुणाचल प्रदेश के कामेंग बेसिन में मत्स्य पालन और पारिस्थितिकी के आकलन पर परामर्श परियोजना पर समझौते पर हस्ताक्षर किया ।
- गंगा नदी में फरक्का बैराज के ऊपरी क्षेत्र में लगभग 1847 हिल्सा मछलियों की रैंचिंग की गई और 54 मछलियों को उनके प्रवास मार्ग के अध्ययन के लिए टैग किया गया।

संस्थान में नए मुख्य प्रशासनिक अधिकारी नियुक्त

संस्थान के नए नियुक्त मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, श्री कुमार विवेक ने दिनांक 30 जनवरी 2023 से अपना कार्यारंभ किया है। इससे पूर्व श्री विवेक भाकृअनुप- भारतीय चारागाह एवं चार अनुसंधान संस्थान, झांसी में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी के पद पर कार्यरत रहे हैं।

श्री कुमार विवेक के कार्य अनुभव को देखा जाए तो प्रचुर विविधताएँ झलकती हैं। उन्होंने वर्ष 1990 में BITS, से इलेक्ट्रिकल और एलेक्ट्रॉनिक में इजिनीयरिंग किया और वर्ष 1990-1993 तक टाटा इस्पात, जमशेदपुर (TISCO) में कार्य किया। वर्ष 1993-1995 में आईआईटी, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से पॉवर सिस्टम में एम.टेक किया और उसी वर्ष उषा इस्पात, गोवा में नियुक्त हुए। वर्ष 1998 में वे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के भारतीय चावल अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद में प्रशासनिक अधिकारी के पद पर नियुक्त हुए। इसके बाद श्री कुमार विवेक परिषद के विभिन्न अनुसंस्थान संस्थानों (CIRG, Makhdoom; IISS, Bhopal; CPRI, Shimla; CIAE, Bhopal; IIPR, Kanpur) में कार्य किया।

संस्थान श्री विवेक का हार्दिक स्वागत करता है।

सेवानिवृत्ति

श्री मोहन लाल सरकार, कुशल सहायक

संस्थान मुख्यालय, बैरकपुर में कार्यरत श्री मोहन लाल सरकार, कुशल सहायक ने दिनांक 31 जनवरी 2023 को संस्थान की सेवा से अवकाश प्राप्त किया। श्री मोहन लाल सरकार ने वर्ष 1987 से अपना कार्यारंभ किया था। संस्थान उनके अवकाश प्राप्त जीवन और उत्तम स्वास्थ्य के लिए कामना करता है।

प्रकाशन मंडल

प्रकाशक: बसन्त कुमार दास, निदेशक,

संकलन एवं सम्पादन: संजीव कुमार साहू, प्रवीण मौर्य, गणेश चंद्र, सुनीता प्रसाद एवं सुमेधा दास

फोटोग्राफी: सुजीत चौधरी एवं सम्बंधित वैज्ञानिक।

भा.कृ.अनु.प.-केंद्रीय अन्तर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान,(आईएसओ 9001: 2015 प्रमाणित संगठन), बैरकपुर, कोलकाता, पश्चिम बंगाल 700120, भारत

दूरभाष: +91-33-25921190/91; फैक्स: +91-33-25920388; ई- मेल : director.cifri@icar.gov.in; वेबसाइट : www.cifri.res.in

ISSN 0970-616X

सिफरी मसिक समाचार में निहित सामग्री प्रकाशक की अनुमति के बिना किसी भी रूप में पुन: उत्पन्न नहीं की जा सकती है